महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का मेयो महाविद्यालय के पुरस्कार वितरण समारोह में भाषण

स्थान :- भोपाल दिनांक :- 20 जनवरी, 2012 समय :- प्रात: 12 बजे

मेयो कॉलेज के नवीन परिसर का उद्घाटन एवं एकाडमिक अवार्ड वितरण समारोह में भाग लेते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

अतीत में हमारा देश आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया के अग्रणी देशों में से एक था। वैदिक और पौराणिक कालों में भी शरीर विज्ञान के क्षेत्र में जो उपलब्धियां हमारे देश में हासिल की गई थीं आज भी समुची दुनिया उसकी कायल है। भगवान धन्वंतरी,च्यवनऋषि और चरक एवं सुश्रुत संहिता इस बात के साक्षी हैं कि हमारा देश चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र में कितना उन्नत और कितना अग्रणी था। केवल जड़ी बूटियों से उपचार ही नहीं बल्कि अत्यंत गंभीर किस्म की शल्य क्रियाओं का उल्लेख हमारे पुराने संदर्भ ग्रंथों में मिलता है।

चिकित्सक का पेशा दुनिया से पावन व्यवसाय है। किसी को जीवन दान देने से बड़ा कोई दूसरा दान नहीं होता है। प्राय: लोग भगवान के बाद चिकित्सक को सम्मानजनक स्थान देते हैं। हम आप सबने कभी न कभी यह अहसास किया है कि जब हमारे शरीर में कोई दु:ख तकलीफ होती है तब दादी-नानी का कोई नुस्खा, वैद्य की कोई पुड़िया अथवा डाक्टरों द्वारा दी गई कोई टेबलेट, जिससे हमें तत्काल तकलीफ से निजात मिलती है उस क्षण हम कितनी राहत महसूस करते हैं और उपचार करने वाले के प्रति कृतज्ञता से भर उठते हैं।

समय के साथ चिकित्सा विज्ञान ने बहुत उन्नति की है। अत्यधिक आधुनिक तथा परिष्कृत उपचार पद्धतियों ने जीवन रक्षा का काम ज्यादा सुगम और सहज बनाया है। यह इसका एक उजला पहलू है। इस सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि कभी चिकित्सा विज्ञान में सिरमौर रहने वाला भारत धीरे-धीरे इस दौड़ में पिछड़ता गया और भारत में उपचार की जो देशज पद्धतियां थीं वह लुप्त प्राय: होती गईं। इसका सबसे दुखद पक्ष यह है कि चिकित्सा विज्ञान ने जैसे -जैसे उन्नति की वैसे-वैसे इलाज केवल बड़े और पैसे वाले लोगों के लिए ही सम्भव रह गया। प्राय: पैसे के अभाव में चिकित्सा विज्ञान की नवीन उपलब्धियां हमारे गांव और गरीबों तक पहुंच ही नहीं पाती हैं।

बड़ती आबादी के सामने चिकित्सा विज्ञान के साधन सुविधाएं बौनी साबित हो रही हैं। गांवों में रहने वाली बड़ी आबादी आज भी समय पर इलाज से वंचित रह जाती है। इसका सर्वाधिक असर महिलाओं और बच्चों पर होता है। महिला परिवार की धुरी होती है और सेहतमंद बच्चा देश का भविष्य। चिकित्सकों का केवल पैसा कमाना ही उद्देश्य नहीं है। जन और समाज के प्रति जो हमारे कर्तव्य हैं,हमारी जिम्मेदारी है,उन्हें भी चिकित्सकों को पूरा करना है।

शासकीय चिकित्सक गांव की पदस्थापना से परहेज करते हैं इसका बड़ा कारण है कि वहां शहरों जैसी सम्पन्नता नहीं है। साथ ही बच्चों की शिक्षा और रहने की सुविधाएं उपलब्ध भी नहीं हैं। मैं आर्थिक रूप से सम्पन्न बड़े औद्योगिक एवं व्यवसायिकों से आग्रह करना चाहूंगा कि अब शहरों की बजाये वे कस्बों और गांवों में ऐसे अस्पताल

का निर्माण करें जहां चिकित्सक को समुचित वेतन के साथ-साथ उसके परिवारजनों को जीवन की बुनियादी सुविधायें भी मिल सकें।

केवल सरकार पर निर्भर रहने से काम नहीं चलेगा। जन सहभागिता इस क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। इसके साथ ही हमारे देश में चिकित्सा उपचार की जो देशी, अत्यंत प्राचीन लेकिन पूरी तरह से प्रमाणिक और नुकसान रहित पद्धतियों को पुनर्जीवित किया जाये। जड़ी-बूटी तथा औषद्यीय पौधों की खेती तथा इसके जानकारों को आवश्यक मदद देकर इस दिशा में बहुत कुछ किया जा सकता है।

मुझे उम्मीद है कि आप सभी चिकित्सकगण इस दिशा में कुछ न कुछ पहल अवश्य करेंगे।

जय हिन्द।